

दुःख आत्मिक संवेदित दिवहरे
मेघना फिस्ली मेरी को नाले में खतर
होत हीर पुनर्गुं को समाझे सखा।
इस दोस्तान साथी आत्मिक राजेद
पुनर्गुं ही, रात्रि अभिषेकरी
उपनिवेशक रामसजीवन और
उपआत्मी सखा ने समुद्र
अवसा ने जड़ी महाकला कर
पुनर्गुं को सुरभित बाहर
निरखला।
हेलेसुं के बाद पुनर्गुं ही शक्ति
परी की। अलसक संविदा

[illegible]

या कि नदी में मेडिकल कचरा भी कड़ाई जाएगी।

